Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

Knowledgeable Research Vol-1, No-12, *July 2023*
An International Open-access Peer-reviewed Journal Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

भारतीय परंपरा व स्त्री विमर्श

बीरम देव
सहायक आचार्य
राजकीय कन्या महाविद्यालय, बूंदी

शोध-आलेख सार:

वस्तुतः स्त्री-विमर्श समकालीन विचार चिन्तन है। प्रारम्भिक काल में भी स्त्री जीवन हिन्दी साहित्य का केन्द्रीय विषय रहा है, लेकिन तथ्य यह है कि इसमें नारी की या तो जीवन गाथा केन्द्र में रही या उसकी व्यथा-कथा। अपनी अस्मिता, आत्मचेतना और अस्तित्वबोध के प्रति नारी की सजगता असल में स्वातंत्र्योत्तरकालीन हिन्दी साहित्य में उत्तरोत्तर विकसित होती गयी। स्व के प्रति सजगता, अपने अधिकार एवं अस्तित्व की चेतना स्त्री-विमर्श की मुख्य शक्ति बनकर उभरी।

मुख्य शब्द- स्वाधीनतापूर्व, विमर्शमूलक, अल्पसंख्यक, स्वातंत्र्योत्तरकालीन, अर्द्धनारीश्वर, बौद्धकालीन, वात्स्यायन, जगज्जननी, जगदम्बिका, पितृसत्तात्मक, सौन्दर्यशास्त्र आदि।

मूल शोध पत्र

जब हम स्त्री-विमर्श की बात करते हैं तो तात्पर्य है- "स्त्री, उसका जीवन और उस जीवन से जुड़ी समस्याएँ तथा उसके दमन-दलन के अनुभवों को अभिव्यक्ति देना और इस दिशा में स्त्री मुक्ति के संघर्ष की विचारधारा को विकसित करना।"[1]

प्राचीन वैदिक संस्कृति में नारी को सम्मान व आदर की दृष्टि से देखा जाता था। ईश्वर की कल्पना अर्द्धनारीश्वर से की गई है। ग्रंथों में प्रायः ऐसा चित्रण है कि स्त्री का स्थान पुरुष के समतुल्य होता था। घर से लेकर शिक्षा तक अन्य कार्यों में भी बराबर का अधिकार स्त्री को प्राप्त था। किन्तु विवाह हेतु जीवन साथी चुनने का अधिकार माता-पिता को ही था। ''मनु युग में नारी की महत्ता तो स्वीकार की गई किन्तु स्वतंत्र जीवन जीने व वेद आदि पढ़ने का अधिकार

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

उससे छीन लिया गया। रामायण काल में दो तरह की नारी हुईं, एक जो घर के ऊँचे आदर्शों का निर्वाह करती थी, जैसे सीता, कौशल्या, सुमित्रा आदि इसके उदाहरण हैं, वही दूसरी ओर सूर्पनखा और ताड़का। महाभारत में भी स्त्रियों की अनेक कथाएँ मिलती हैं, जिन्होंने संस्कार व संस्कृति के दायित्वों के प्रति अपने अधिकार का दुरुपयोग नहीं किया। दमयन्ती, द्रौपदी, सावित्री, शकुन्तला इत्यादि का जन्म इसी भारत भूमि पर हुआ, जो अपने ज्ञान के बल पर दर्शनशास्त्र पर वाद-विवाद करती हैं और याज्ञवल्क्य जैसे ज्ञानी को भी शास्त्रज्ञ कर निरूत्तर कर देने की क्षमता रखने वाली हैं। ऋग्वेद काल की लोपामुद्रा भी इसका ज्वलन्त उदाहरण हैं।''[2]

स्वाधीनतापूर्व और स्वाधीनता प्राप्ति के बाद से लेकर सन् 1960 तक के लेखन में भी विमर्श की अभिव्यक्ति अवश्य मिलती है, परन्तु इसमें विमर्श से ज्यादा तत्कालीन कटु यथार्थ की तथा समस्याओं की भयावहता अधिक दृढ़ता के साथ अंकित करने का प्रयास परिलक्षित होता है। 'विमर्श' केन्द्रित लेखन प्रायः 1960 के बाद ही नजर आता है। शिक्षा, पश्चिमी साहचर्य और सामाजिक प्रबोधन ने लोकचेतना एवं लोकजागरण के साथ-साथ समकालीन साहित्यकारों को भी प्रभावित किया। फलस्वरूप विभिन्न विषयों, प्रश्नों तथा मसलों पर संवेदना के साथ लेखन हुआ और अनेक विमर्शमूलक विचारों की अभिव्यक्ति हुई उत्तर आधुनिक विमर्श, स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, आदिवासी-विमर्श, अल्पसंख्यक-विमर्श आदि।

"स्त्री-विमर्श हिन्दी साहित्य का केन्द्रीय विषय बन चुका है। इस विषय पर नयी-नयी पुस्तकों का प्रकाशन तथा विभिन्न स्थानों पर इस विषय से संबंधित संगोष्ठियों का आयोजन इस विषय की महत्ता को सिद्ध करता है।"[3]

हिन्दी साहित्य में स्त्री-विमर्श विगत कई दशकों से पर्याप्त चर्चित रहा है और इसके जरिए स्त्री के शोषण, दमन और उत्पीड़न की बातें सामने आ रही हैं, ताकि स्त्री जाति को समाज में वास्तविक अधिकार प्राप्त हो सकें। आज नारी पुरुष सत्तात्मक समाज में व्याप्त विषमता के विरुद्ध विद्रोह करते हुए अपनी देह, चेतना एवं अस्तित्व के गहरे विमर्श से कहीं आगे पूँजीवादी व्यवस्था एवं उपभोगवादी दृष्टि को बदलने के लिए प्रयत्नशील दिखायी पड़ती है। अब शोषण के प्रति वह अस्वीकार की मुद्रा में आ गयी हैं वह जानना चाहती है कि जब इस धरती पर हर एक को समान अधिकार है तो वह अपने अधिकारों से वंचित क्यों है? यही कारण है कि अनेक स्त्री-

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

विमर्शकर बराबर स्त्री के उत्पीड़न के इतिवृत्त के साथ-साथ उन सवालों को भी प्रकाश में ला रहे हैं, जिनसे स्त्रियों की उपेक्षा हुई है।

आज भले ही स्त्री-आन्दोलन या स्त्री-विमर्श नाम प्रचलन में है, परन्तु यदि इतिहास पर दृष्टि डालें तो विदित होता है कि "वात्स्यायन के कामसूत्र, बौद्धकालीन थेरीगाथा, मध्यकालीन सूरदास, मीरां इत्यादि से लेकर आज तक स्त्री-विमर्ष का एक लम्बा इतिहास भारतवर्ष में रहा है। नवोत्थान काल में राजा राममोहन राय, विद्यासागर, दयानन्द सरस्वती इत्यादि के प्रोत्साहन तथा प्रेरणा से नारी मुक्ति एवं उसके अधिकारों के प्रति सजगता लाने के उपक्रम हुए। विभिन्न स्त्री संगठनों की स्थापना तथा स्त्री विषयक पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन भी समानान्तर चले। हिन्दी साहित्य में नारी अधिकारों को वाणी देने वाली सर्वप्रथम महिला होने का श्रेय बंगमहिला को जाता है।"[4]

''या देवि सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै-नमस्तस्यैनमस्तस्यै नमो नमः''[5]

अर्थात् स्त्री जगज्जननी जगदम्बिका है, लज्जा स्वरूपा है जिसके सम्बन्ध में ही प्राचीन भारतीय वाङ्गमय से लेकर आज तक स्त्री विमर्श किसी न किसी रूप में विचारणीय विषय रहा है। आज स्त्री विमर्श साहित्य व समाज की सच्चाई है, न अपवाद है। वह एक ही समय में हमारे देशकाल और पूरी दुनिया से जुड़ा है। वह हमारे समय की जरुरत है। वह समग्र आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, भाषिक व सांस्कृतिक विमर्श है। स्त्री विमर्श के अन्तर्गत स्त्री की गुलामी, स्त्री-पुरुष असमानता के ऐतिहासिक कारणों, स्त्री शोषण के अर्थशास्त्र, घरेलू श्रम की स्थिति, पितृसत्तात्मक दर्शन और मनोविज्ञान, यौन उत्पीड़न, यौन के आधार पर भेदभाव, समान कार्य के लिए समान वेतन, स्त्री विमर्श के सिद्धान्त, स्त्री विमर्श का सौन्दर्यशास्त्र आदि विषयों पर स्त्री विमर्श की विविध रेडिकल बुर्जुआ धाराओं और माक्र्सवाद के विविध धाराओं के बीच घनघोर बहसें चल रही है। क्योंकि आज भी भारत की स्त्रियाँ पतिव्रता के बहानें कीचड़ में ढकेली जाती है। पुरुष के पैरों तले उन्हें जगह दी जाती है। आज भी कन्यादान दिया जाता है। बिस्तर पर बैठाया जाता है और जब चाहे तब बिस्तर से लात मारकर उतार दिया जाता है।

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

आज भी पुरुष उन्हें इज्जत आबरू देता है और जब चाहे उसे बेपरदा कर देता है। वे लात मारते हैं, दोषी ठहराते हैं, पुरुष कितना निर्मल और कठोर है, इसका वर्णन करती हुई तसलीमा नसरीन ने लिखा है- "नारी तुम जो मुँह के बल पड़ी हुई हो, तुम्हारे सारे बदन में पुरुष के पैने दाँतों के निशान हैं। तुम्हें सूँघने के लिए आया हुआ एक कुत्ता भी दर्द के मारे नीला पड़ जाएगा। तुम्हें देखने के लिए आये हुए चील कौवे भी अपने नाखून छिपाएँगे और यदि फिर से कोई काटे तो वह कोई सुअर नहीं, कोई काला नाग नहीं, कोई पुरुष ही होगा। वह देखो वे तुम्हें नोच खाने आ रहे हैं, वे तुम्हें चखने आ रहे हैं, वे मृत्यु का दूसरा नाम है।"[6]

स्त्री-विमर्श पर गहन चिन्तन करने का प्रयास भारत में भी अनेक लेखिकाओं ने अपने-अपने ढंग से किया-प्रभा खेतान, मृणाल पांडे, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, अनामिका आदि। अनामिका ने स्त्री-विमर्श को जिस ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है, वह उल्लेखनीय है उसके तर्क हैं- "स्त्री-आन्दोलन की समर्थक स्त्रियाँ पुरुष नहीं बनना चाहतीं। ब्रा-बर्निंग आदि एकाध आवेशमूलक घटनाओं के साक्ष्य से यह नहीं समझना चाहिए कि ये स्त्रियाँ अपनी विशिष्ट दैहिक, मानसिक और भाषिक संरचना पर गर्व नहीं करतीं। जो प्राकृतिक विशिष्टताएँ हैं, शर्मानाक वे नहीं, शर्मनाक आरोपित सामाजिक मानदंड हैं, जो दोहरे हैं और जिन पर पुनर्विचार होना ही चाहिए ताकि विकास के अवसर सबको समान रूप में मिल सकें।"[7]

स्त्री और पुरुष की लड़ाई का व्याकरण सामन्तों और असामियों, पूँजीपतियों और मजदूरों, औपनिवेशिक ताकतों और शोषितों के बीच की लड़ाई के व्याकरण से अलग है। स्त्री और पुरुष के बीच की यह लड़ाई दो वर्गों, दो नस्लों, दो जातियों, दो दलों, दो राष्ट्रों के बीच की लड़ाइयों से तुलनीय नहीं। सम्पन्न और विपन्न, ऊँच और नीच, शासक और शासित, गोरे और काले के बीच जो जंग छिड़ी है।

भारतीय समाज में किसी भी काल में विधवा की स्थिति बहुत दयनीय रही हैं। भारतीय समाज यहाँ मानकर चलता है कि- स्त्री का विवाह संस्कार जीवन में सिर्फ एक ही बार होता है। पति के देहांत के बाद पत्नी को उपेक्षित जीवन जीना पड़ता है। विधवा स्त्री के साथ समाज अमानवीय व्यवहार करता है। विधवाओं की स्थिति चिंताजनक रही हैं। आज शिक्षा, नारी समानता के विचारवादी के कारण भारतीय नारी के जीवन में परिवर्तित आ गया है। आज भारतीय समाज में विधवा की स्थिति मध्ययुगीन विधवा जैसी नहीं है फिर भी भारतीय विधवा नारी का जीवन

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

अपेक्षित और दयनीय रहा है। प्रस्तुत समस्या के संबंध में डॉ. रेखा कुलकर्णी का विचार है कि- "जिस तरह भारतीय पतिव्रता स्त्री दुनिया में आदर गौरव एवं सम्मान की वस्तु है, उसी प्रकार भारतीय विधवा जैसी तुच्छ, उपेक्षित, दयनीय दुनिया की कोई अन्य वस्तु नहीं है। हिन्दी के कहानीकारों ने अपनी कहानियों में विधवा समस्या को चित्रित किया है।"[8]

पिछले कुछ दशकों में अपनी लेखनी की धार से महिला साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। उन्होंने अपनी दबी भावनाओं को रचना के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया। उनके द्वारा ऐसे-ऐसे पात्र रचे गये कि वे सीधा समाज से संवाद करते नजर आते हैं। समाज की थोथी मान्यताओं को अस्वीकार कर नये मानव मूल्यों की स्थापना करने की चेष्टा करते हैं। इन्हीं बातों से जुड़ा एक प्रसंग द्रष्टव्य है। समाज जिस कर्म को व्यभिचार की श्रेणी में रखा है।

"स्त्री के मनुष्य होने की अवधारणा का रूप आधुनिक विचारों का द्वन्द्व मात्र नहीं है वरन् पुरुषों की दृष्टि में हुए व्यापक बदलाव की उपज भी है। नारी की नई चेतना ने एक ऐसी जीवनदृष्टि प्रदान कर दी जिसने सदियों से चली आती पारिवारिक संस्थाओं, दाम्पत्य और प्रेम की अवधारणाओं का स्वरूप भी बदला है अब स्त्रियाँ पुरुषों की किसी बात को सुनकर नजर झुका लेना नहीं चाहती बल्कि उन्हें जवाब देना भी चाहती हैं।"[9] यह नारी चेतना का नया रूप है साथ ही समाज की स्वीकृति का नया औदात्य भी। पुरुष वही है, किन्तु स्त्रियों में बहुत बदलाव आ गया है। सदियों से दबी स्त्रीमन की यह आवाज आधुनिक प्रगतिशील समाज का सूचक है साथ ही उसके चुनौती की आधारशिला भी। आज का पुरुष समाज किसी स्त्री के कठोर वचन सुनकर आत्मसात कर ले रहा है, इससे सुखद स्थिति और क्या हो सकती है।

शिक्षा दर में हुई बढ़ोत्तरी ने स्त्री के अभिशप्त जीवन में काफी बदलाव ला दिया है। जिस उम्र में स्त्रियों के कन्धे पर एक-दो बच्चों का बोझ हो जाया करता था आज उसी कन्धे पर किताबों से सजे बस्ते होते हैं जो समाज में हुए स्त्रियों के प्रति बदलाव को प्रदर्शित करते हैं। कहना न होगा कि 21वीं सदी में स्त्रियों ने जिस क्रान्तिकारिता के साथ सभी क्षेत्रों में अपने को प्रदर्शित किया। प्राचीन साहित्य तथा हमारे सारे धार्मिक पुराण, वेद, संहिताएँ सभी मर्दवादी वर्चस्व से भरे पड़े हैं, क्योंकि सारे विधान, सारी संहिताएँ, सारे नियम धर्म, कानून पुरुषों ने रचे हैं, इसलिए हर कानून, हर रीति-रिवाज और परम्परा का पलड़ा उनके पक्ष में ही झुका हुआ है। साहित्य भी

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

इससे अछूता नहीं है। भारतीय नारी की जो तस्वीर अब तक साहित्य में चित्रित है, वह त्यागमयी है। सती-सावित्री है, जिसके मुँह में जुबान नहीं है, जो सबसे पहले उठती है, दिन भर घर की चक्की में पिसती है, सबसे बाद में सोती है और कभी शिकायत नहीं करती।

यहाँ तक कि सारे व्रत, त्योहार औरत के लिए हैं। कभी घर की सुख-समृद्धि, कभी बच्चों की खुशहाली के लिए, पर कहीं भी स्त्री की दीर्घायु के लिए व्रत का कोई विधान नहीं। परिवार की हर समस्या-निदान के लिए व्रत अनिवार्य है। पारिवारिक ढाँचे में स्त्री चाहे सबसे अन्तिम सीढ़ी पर खड़ी है, पर व्रत करने-कराने में उसे सबसे पहली पंक्ति में रखा गया है। परोक्ष रूप में अपनी इच्छाओं को मारने का अभ्यास स्वरूप ही हैं ये व्रत-उपवास।

हम चाहें कितना ही गार्गी, ओपाला, घोषा आदि का उदाहरण दे लें, पर यह सत्य है कि नारी कभी पुरुष का स्थान नहीं पा सकी है, क्योंकि धार्मिक आचार-विचार और नियमन पर पुरुष का ही नियंत्रण रहा है इसलिए उन्होंने सारे अधिकार और स्वतंत्रता अपने पास रखी है जबकि सारी जिम्मेदारी स्त्री को सौंप दी। लेकिन अब यह भ्रमजाल टूटने लगा है और स्त्री अपनी सत्ता को पहचानने लगी है- वह जानती है कि पुरुष भी नारी के बिना वैसे ही अधूरा है, जैसे नारी पुरुष के बिना।

अनामिका परम्परागत रूढ़ियों, मान्यताओं, आस्थाओं में न केवल स्त्री की उपस्थिति को विश्लेषित करती है, बल्कि आधुनिक परिवेश में उसकी महत्ता और उसकी भूमिका को भी। "नैतिक शब्द का अर्थ आचरण से सम्बन्धित है। यह 'नीति' बना है। समाज धर्म और राज्य द्वारा निर्मित नियमों के अनुकूल चलना ही नीति है और उन नियमों के अनुकूल आचरण से सम्बन्धित मूल्य ही नैतिक मूल्य है। मूल्यगत परिवर्तन आकस्मिक नहीं होता। मूल्य एक प्रकार प्रवाह की तरह होते हैं, जिनमें नई धाराएँ आकर सम्मिलित होती रहती है और कहीं पुरानी धाराएँ इधर-उधर रुककर सूख जाती है।"[10]

"भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों को आमतौर पर यौन से जोड़ा जाता रहा है और विवाहेत्तर यौन-सम्बन्धों को अनैतिक माना जाता है। फिर भी अयुन आकर्षण जीवन की एक मनोवैज्ञानिक सच्चाई है। अतः हर युग और हर समाज में उन्मुक्त यौन सम्बन्ध होते ही है। यौन संबंधों के क्षेत्र में भी उच्छृंखलता बढ़ती हुई दृष्टिगोचर होती है। महानगरों में शराबम सभ्यता की परिचरारिक बन गयी है। यौप विषयक दृष्टि जैसी नहीं रही जैसी पहले थी। भारतीय

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

समाज-व्यवस्था में विवाह पूर्व यौन संबंध प्रायः मान्य नहीं होते। इस प्रकार के संबंधों को भारतीय समाज अनैतिक की दृष्टि से देखता है।"[11]

सामाजिक कुरीतियों एवं पारिवारिक बंधनों के प्रति विरोध एवं विद्रोह करने वाली भक्तकाल की प्रमुख कवयित्री मीरांबाई अन्य संत कवियों की तुलना में अधिक आक्रामक और जुझारू है। सामाजिक चेतना की मशाल जलाने वाली मीरांबाई ने स्त्री के ऊपर किये अत्याचारों का मार्मिक वर्णन किया है। 'सती प्रथा' के विरोध को और वैधव्य जीवन की यातना को भी रेखांकित किया है। "मीरांबाई ने न तो पुनर्विवाह की बात कही और न ही विधवा विवाह की माँग की। मीरां ने अपने जीवन के दुखों को कृष्ण भक्ति के सहारे काट दिया, विधवा विवाह की विशुद्ध मांग सीमांतनी उपदेश की अज्ञात लेखिका ने किया है। समाज के डर से अपना नाम अज्ञात रखने वाली लेखिका से पुनः विवाह की आवश्यकता को धर्म-सम्मत मानते हुए तर्कों के माध्यम से प्रमाणित किया है कि पुरुष की तरह स्त्री को भी पति के न रहने पर दूसरा या तीसरा विवाह करके सम्मानपूर्वक समाज में रहने का अधिकार है। जिस प्रकार मनु महाराज पुत्र हेतु विवाह को आवश्यक मानते हैं उसी प्रकार यह लेखिका भी विशेषकर बाल विधवाओं।"[12]

निष्कर्ष- भारतीय समाज में स्त्री को देवी का रूप माना है। यहाँ स्त्री के जीवन-शैली में किसी भी प्रकार का बदलाव समाज स्वीकारता नहीं है। जिस प्रकार व्यवस्था चलती आ रही है। उसी प्रकार चलती रहे उसी में सबकी भलाई भी है पर समय के साथ परम्परागत मान्यताओं को स्त्री ने अपने पैरों के नीचे कुचलती गई और आगे बढ़ती गई। आज समय ऐसा आ गया है वह आजादी का शायद गलत फायदा उठा रही है या उसका गलत अर्थ लगा लिया है। स्वेच्छाचारी बन गई है। बताते हुए बड़ा होता है पर यही सत्य है।

संदर्भ सूची-

1. अनामिका का काव्य: आधुनिक स्त्री विमर्श, मंजु रूस्तोगी, पृ.13।
2. भारतीय परम्परा, आधुनिकता और स्त्री विमर्श, सं. डॉ. चम्पा सिंह, पृ. 235।
3. अनामिका का काव्य: आधुनिक स्त्री विमर्श, मंजु रूस्तोगी, पृ.13।
4. अनामिका का काव्य: आधुनिक स्त्री विमर्श, मंजु रूस्तोगी, पृ.49।
5. भारतीय परम्परा, आधुनिकता और स्त्री विमर्श, सं. डॉ. चम्पा सिंह, पृ. 82।
6. भारतीय परम्परा, आधुनिकता और स्त्री विमर्श, सं. डॉ. चम्पा सिंह, पृ. 82।

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

7. अनामिका का काव्य: आधुनिक स्त्री विमर्श, मंजु रूस्तोगी, पृ.25।
8. समकालिन हिंदी साहित्य में नारी संवेदना, डॉ. दयानन्द सालुंके, पृ. 174।
9. भारतीय परम्परा, आधुनिकता और स्त्री विमर्श, सं. डॉ. चम्पा सिंह, पृ. 303।
10. अनामिका का काव्य: आधुनिक स्त्री विमर्श, मंजु रूस्तोगी, पृ.125।
11. समकालिन हिंदी साहित्य में नारी संवेदना, डॉ. दयानन्द सालुंके, पृ. 237।
12. भारतीय परम्परा, आधुनिकता और स्त्री विमर्श, सं. डॉ. चम्पा सिंह, पृ. 177